अभ्यास पत्रक

पाठ – पद (मीराबाई)

नाम :- ..... कक्षा :- ..... अवधि :- ..... अनुक्रमांक :- ..... प्राप्तांक :- .....

1. काव्यांश पढ़िए और उत्तर दीजिए – (3 अंक)

"हरि आप हरो जन री भीर।
द्रोपदी री लाज राखी, आप बढ़ायो चीर।
भगत कारण रूप नरहरि, धरयो आप सरीर।
बूढ़तो गजराज राख्यो, काटी कुञ्जर पीर।
दासी मीराँ लाल गिरधर, हरो म्हारी भीर।"

1. कवयित्री श्रीकृष्ण से अपनी कौन-सी पीड़ा हरने की प्रार्थना करती हैं?

उत्तर - .....
.....

2. इन पंक्तियों में श्रीकृष्ण की कौन-कौन सी लीलाओं का उल्लेख है?

उत्तर - .....
.....

3. 'दासी मीराँ' पंक्ति में कवयित्री के कौन-से भाव प्रकट होते हैं?

उत्तर - .....
.....

2. Assertion-Reason आधारित प्रश्न – (2x1=2 अंक)

4. **कथन:** मीराबाई की भक्ति दास्य भाव की है।
   कारण: उन्होंने श्रीकृष्ण को प्रभु मानते हुए स्वयं को उनकी दासी कहा है।
   (क) A: सही, R: सही और R कथन की सही व्याख्या है। (ग) A: सही, R: गलत
   (ख) A: सही, R: सही पर R कथन की व्याख्या नहीं है। (घ) A: गलत, R: सही

5. **कथन:** मीराबाई श्रीकृष्ण से विरह में दुखी होकर उन्हें दोष देती हैं।
   कारण: वे चाहती हैं कि कृष्ण उन्हें त्याग दें।
   (क) A: सही, R: सही और R कथन की सही व्याख्या है। (ग) A: सही, R: गलत
   (ख) A: सही, R: सही पर R कथन की व्याख्या नहीं है। (घ) A: गलत, R: सही

3. बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs) – (5x1=5 अंक)

6. मीराबाई किस भक्तिधारा से संबंधित हैं?
   (क) निर्गुण भक्ति (ख) सगुण भक्ति (ग) ज्ञानमार्ग (घ) योगमार्ग

7. मीराबाई ने किस अवतार की सहायता से प्रह्लाद की रक्षा का वर्णन किया है?
   (क) राम (ख) वामन (ग) नरसिंह (घ) बुद्ध

8. "काटी कुञ्जर पीर" का अर्थ क्या है?
   (क) हाथी को मारा (ख) हाथी की पीड़ा दूर की
   (ग) हाथी को बाँधा (घ) हाथी को डुबाया

9. मीराबाई की भाषा शैली में कौन-सा तत्व प्रमुख है?
   (क) व्याकरणिक शुद्धता (ख) विदेशी शब्द
   (ग) लोकबोली व प्रवाह (घ) संस्कृत के तत्सम शब्द

edyarchive

10. ‘लाल गिरधर’ में ‘लाल’ शब्द का क्या अर्थ है?

(क) लाल रंग (ख) बेटा (ग) प्रियतम (घ) उपहास

4. लघु उत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक 2 अंक, कुल 6 अंक)

11. मीराबाई ने श्रीकृष्ण के किन तीन रूपों या कार्यों का स्मरण किया है?

उत्तर - .....

.....

.....

12. “हरि आप हरो जन री भीर” में मीराबाई का कौन-सा भाव प्रकट होता है?

उत्तर - .....

.....

.....

13. मीराबाई की भाषा शैली की दो विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर - .....

.....

.....

5. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न – (4 अंक) *(उत्तर 100–120 शब्दों में दीजिए)*

14. मीराबाई की भक्ति भावना को उनके पदों के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

6. निबंधात्मक प्रश्न – (5 अंक) *(उत्तर 160–180 शब्दों में दीजिए)*

15. “मीराबाई की कविता भक्त और भगवान के आत्मिक संबंध की कविता है” – इस कथन की पुष्टि उदाहरण सहित कीजिए।

उत्तर - .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

egyanarchive

उत्तर कुंजी

1. मीराबाई अपने दुख, पीड़ा और संकटों को हरने के लिए श्रीकृष्ण से प्रार्थना करती हैं।

2. द्रौपदी की चीर रक्षा, प्रह्लाद की रक्षा हेतु नरसिंह अवतार, और गजराज को मगरमच्छ से बचाने की लीला।

3. इनमें उनकी दास्य भक्ति, नम्रता और कृष्ण के प्रति पूर्ण समर्पण भाव प्रकट होता है।

4. (क)

5. (घ)

6. (ख)

7. (ग)

8. (ख)

9. (ग)

10. (ग)

11.

- द्रौपदी की चीर रक्षा
- प्रह्लाद की रक्षा के लिए नरसिंह रूप
- गजराज को मगरमच्छ से मुक्त करना

12. यह प्रार्थना भाव है, जिसमें मीराबाई अपने ईश्वर से कृपा की याचना करती हैं।

13.

- राजस्थानी, ब्रज और गुजराती मिश्रित सरल भाषा
- लयात्मकता व भाव की गहनता

14. मीराबाई की भक्ति भावना अत्यंत सच्ची, निश्छल और समर्पण से परिपूर्ण है। वे अपने प्रभु श्रीकृष्ण को आराध्य मानती हैं और उन्हें प्रियतम, स्वामी, रक्षक – सभी रूपों में देखती हैं। अपने पदों में वे कभी उनसे प्रार्थना करती हैं कि वे उनकी पीड़ा हरें, तो कभी उन्हें अपना सेवक बना लेने की विनती करती हैं। मीराबाई का यह मानना है कि प्रभु की सेवा, उनका स्मरण और दर्शन – यही भक्ति का सार है। उनकी भक्ति निर्भय, आत्मिक और समाज से विरक्त है। वे अपने प्रभु के बिना जीवन की कल्पना नहीं कर सकतीं।

15. मीराबाई की काव्य-भक्ति केवल रीति या परंपरा पर आधारित नहीं है, बल्कि वह आत्मिक जुड़ाव का सजीव प्रमाण है। उनके पदों में भगवान श्रीकृष्ण से गहरा संबंध झलकता है – जैसे एक आत्मा दूसरी आत्मा से संवाद कर रही हो। वे श्रीकृष्ण को आराध्य के साथ-साथ प्रियतम मानती हैं। वे उन्हें द्रौपदी की लाज बचाने वाले, प्रह्लाद के रक्षक, गजराज के संकट हर्ता के रूप में स्मरण करती हैं और उसी कृपा की याचना करती हैं। उनके पदों में प्रेम है, समर्पण है, विरह है, लेकिन दोष नहीं है। उनका जीवन और कविता दोनों भक्ति की पराकाष्ठा हैं। यह संबंध बाहरी नहीं, भीतरी है – जहाँ भक्त और भगवान एकाकार हो जाते हैं। इसलिए उनकी कविता आत्मा की पुकार है।